This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रंथालय

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M2010 विषय ~~[illegible]~~ मंत्रशास्त्र

नांव श्रीपद्माके मंत्रको विधान (गणेश)

लेखक / लिपीकार (हिन्दी) (MSS)

पृष्ठ 04 काळ वि. सं. 1846 पूर्ण / ~~अपूर्ण~~

Checked 2012

॥४॥ जारमैं २··· उदिमल गैं चारह जारमैं ४··· मैं वसीकरन होई तीनह
जारमै ३··· सभामोह दोह जारमै २··· पंदमोचन दोह जारमै ६···
विदेसी घर आवै दोह जारमै २··· षेती भली होई दोह जारमै
२··· विसनासै सवा दोसै जंत्र मै वाजके वालक होई पांचह
जारमै ५··· राजा प्रसंन्न होई चारह जारमै ४··· जौ चीत्र की ही
ध्या होई सो सनपुस्न करहो नी अनहो ॥ निपंद्र हिह जारमै १५···
जौ लीष कै भोजन मै वाहावे कनक मै लप८ कै तो सर्व सिद्धि होई
सत्रु कारज कौ उत्तर दिसा मुष करै इती श्री पद्रा के जंत्र की विधि ॥

संपुरन ॥ मिती ज्येष्ट वदि ५ संवत १८४६

सैपरैतौनपारावैसर्वसिद्धुकर अथा जिनतीसकैल्पकरलेईतौ
नताकौसिद्धहोईलक्ष्मीप्रसंन्नहोई २००० निरोगीहोई ६---
सरस्वतीप्रसप्रसंन्नहोई १---- औषदिसिध्धिहोई दसहजारमै
१----मंत्रसिध्धिहोई २---महेस्वरीप्रसन्नहोई चारहजार ४---
मानसवैरीनहोईतीनहजारमै ३--- प्रेतछुटै दोहजारमै २---
मानसवसहोईतीनहजारमै ३--- तीजारीजाई छैहजारमै ६---
गईवस्तपावैपांचहजारमै ५--- देवताप्रसंन्नहोई पाचहजार
मै ५---दुषनासैसुषहोई दोहजारमै २--- सत्रवसिहोई दोह

॥३॥ ६ कीचामुंडादेव्यै नमः वैरीप्रितिकरैवसीकरैनहोईकष्टीनीखवैरे
चोरजोनचीनेलेगयेहोईतौयहजंत्रलिषिकेरहयामैबाधैजंत्र
पढैतौसवमिलै॥रोगीनिरोगीहोईवंध्यछुटैअरुजोवैरीकोमारै
चाहैतौमसांनभूमिमैजंत्रलीषैतरसत्रकौनउलीयैमसाने
भूमिमैगाडीदेईवैरीमरैआकेकेपत्रपरपंद्राहजंत्रभरैरोज१५
पंद्रहऐकऐकपंद्राहजंत्रकेतरेसत्रकौनउलीयै: आगमैवरीदे
ईरोजसत्रकौनासहोईजैत्रदरा आउमेवलादईजानवहि ॥३॥

जटामंडलवेष्टितंललाटेचंद्ररेंषाघंसवीलंकारभूषितं॥व
रक्रियाफलमावलीइती श्रीयुजापध्धिदासमादरा॥अथजंत्र
लिषतेताकीवीधताकीवीधकोॐसोभरोकौनेकाजीके
लानैकौनअंकैतेभरैकोनसीकोकौनःचहिजेषाभरीयैवाः
दोतीनीकेअंकतेआवीसातकेअंतभरीअे॥

८ ११	फा फी	का शि	दे वी	यत ती	मर्क
३. मे	वृ.	मि	क	मे	कु
४ पु.	कं.	तु	वृ	सि	मीध

अस्तीनौकेअंकतै
भरीऔ ॐ स्वीं ह्री

६	१	८	६ के	१५
७	५	३	७ ति	५गु
२	८	४	चे २	६ के

॥२॥ कृगतसुंदर्याभरतासरेपितिषितंप्रवेसवित्वातदितंस्थितपी
प्रषपानतःवसकंसथहस्त्रेनपललंवामतःकरेदषंनदेवदेवेस
सनीभरनभूतिगनेसानिसवीभरनभूषितंरक्तवस्त्रत्रिनेत्रंचर
कपद्मासनेःस्थितचतुरभुजमहाकायंदिदंतंससिताननरष्ट
चदुक्षिनेहस्तेदंतंचततदाव्रांम्हनकीभोजनकरावेपुंयकरेज
व्यासक्रितवजंत्रऐकांत्रकरेतावीजमैष्यरैःहीमदैकैमथैराषै
अष्टसिधिनववनिधिहोरीधःकरेमासाकुसौचहस्ताभ्यां ॥२॥

द्दिरेजंस्वमरिशांनिश्चतंभवेत ॐ घ्नेतेशुभ्रेवोतिइितिसर्व स्वलंमलंजस्वनामाजपेत्मं
त्रसहस्त्रस्तवसीमनेसहस्त्र दसहोमेनराजास्तथोवसोभवेभ श्रीगंनेसन्मा३स्या
ॐरश्र्नषोउसहुजयःतथाचक्रक्रस्नचत्वरथीमारभ्ययावत्रशुक्राचहर्थिवासा
हुःस्त्रिहिजयेन्मंत्रपोषिनियमपवं ~~[illegible]~~र्के स्नामयेनाघुनानिसनिवेच
गुऽपपसमुत्ताधि ष्टोजपेन्मंत्रगनेसौं पसदाप्रय श्वेताकोंनकतिकनास्तुचंद्र
नकेन्म३ंगघ्यमंत्रयतिः स्वप्पदिजप्पधिजप्पजुरूसनिधोमःसासोऽससह
स्त्रसिंधिमंत्रोभवेधुवेः अथध्यानं त्रवस्यामिर तसिंघासनोपरी पदमसने
समासीनंस्तवर्नंभुजाढ्यंन श्री यस्वामनतीधमृतापमघुपातत वामा

श्रीगणेशायनमः अथांतश्रीविघ्नहरत्वा गणेश्वरदेवताहं स्वेत श्रांत्र स्वेत चंद
।। न।। आथवांहस्तीकोदंत।। ऐतीनैवस्तको गणेशवनाये।। दक्षिन मुखमूरत
पदुमासनबैठे।। गणेशके माथे मे जटा अर्धचंद्रमा राखे।। सर्पकै सौ कंदुरा
षे।। तीनिनेत्र राखे।। ऐकनेत्र लिलाट राखै।। चतुर हस्तवनावै।। प्रथम हस्त ल
डुवा।। दुजे हस्त तवलु।। तीजे हस्त रुद्रमाला।। चतुर हस्त मुदगर।। पुजै पुनः पुजे प्र
[illegible]चम पुजे।। ऐकु सौं १०८ वेर।। मंत्र जपै।। ॐ नमो गजाय जितायनमस्ततेनमः।। ॐ सपा
माजेसमिथोः नसौभग्यंलभते ध्रुवं सष्टोतरसतैर्मं त्रीमलमंत्रभिमंत्रतंनिधने
मंदिरेजस्वमवेद घाटनं परंमन ष्पारि चत्तमहूतं श्रीलक्षं चापिनवितंनिधनेमं ।।१।।

मेष सीम धेन				वृष कंन्या मकर				मीथुन तुल कुंभ				करक व्रीरसक मीन			
नरक मलोक				सुकार मलोक				सतीम लोक				बीरमन मलोक			
४	८	२	सोहहसे	८	१	६	पसर	८	३	४	सीतीको नीबका	२	७	६	
३	५	७	लोबेछी	३	५	७	गंहसोली बेबेसवन	१	५	८	पुरसे लाबेजु	८	५	१	
२	७	६	बरंनरसो	४	८	२	नरसी	६	७	२	कुवरन रसो	४	३	८	सोहहोसेलाबे

M.3010

```
[OrderDescription]
,CREATED=19.07.19 12:32
,TRANSFERRED=2019/07/19 at 12:37:15
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0001025
,Book Name=M-2010-SHRIPDROKEJANTRAKIVIDHI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,
```